सबको सन्मति

हिन्दू मुस्लिम अलग-अलग है, इस भावना ने गाँधी जी को बहुत दुख दिया। कौन हिन्दू? कौन मुस्लिम? सब एक ही है। मानव मात्र की एक ही जाति है, सब धर्म एक ही हैं, कुछ भी अलग नहीं है। सब का एक ही आध्यात्मिक धर्म है, सबका एक ही दिव्य परिवार है।

गाँधी जी कहते थे- ईश्वर और अल्लाह अलग-अलग नहीं है। दोनो एक ही है। ऐसे गाँधी जी देश के बापू ह। पिता ह। उन्होनें अहिंसा को अपनाया। वे धर्म और जाति के नाम पर होने वाली मारकाट को देख कर बहुत आहत हुए। मुस्लिम को हिन्दू और हिन्दू को मुस्लिम आदर नहीं देते। गाँधी जी ने हिंसा को छोड़ अहिंसा को अपनाया, वे तो अहिंसा के अवतार थे। हिंसा छोड़ो का नारा उन्होंने बुलन्द किया।

लेकिन इस हिंसा को छोड़ हंस को पकड़ना दूसरी सीढ़ी है जो पिरामिंड स्पिरिचुअल सोसाइटी मास्टर्स का आदर्श है। पहली सीढ़ी- अहिंसा परम धर्म है- इसी से भारत ने आज़ादी पाई। गाँधी जी विशुद्ध चक्र के प्रतीक ह। उन्होने प्रार्थना की कि हे प्रभु सारी दुनिया को सन्मति दीजिए। वास्तव में सन्मति का मतलब है सच से मिली हुई बुद्धि।

सच का मतलब है आत्मा।

जिस मति के साथ आत्मा मिली रहती है, वही सन्मति है।

सन्मति है कि सब बराबर है।

यह सब जानना सन्मति है कि-

मैं यह शरीर नही हूँ, मैं आत्म पदार्थ हूँ।

अपनी वास्तविकता के सृष्टिकर्ता स्वयं हम ही है।

हम सब कई जन्म परम्परा में और कर्म परम्परा में अनेक पाठ सीख रहे ह।

बुराई करने पर बुराई, भलाई करने पर भलाई मिलती है।इस प्रकार कर्म सिद्धान्त के मुख्य प्रभाव को जानना चाहिए। किसी भी जानवर को न मारे, उनकी रक्षा करें।

गाँधी जी तो ईश्वर से प्रार्थना कर रहे है कि सबको सन्मति दीजिए लेकिन सन्मति कौन दे सकता है? वह तो स्वयं प्राप्त करनी होगी। कैसे? ध्यान द्वारा साँस पर ध्यान रखने से।

चित्तवृत्ति के निरोध से। विश्व प्राणशक्ति के आह्वान से। नाड़ीमण्डल की शुद्धि से। दिव्यचक्षु की उत्तेजना से। यह सन्मति हमें स्वंय प्राप्त करनी है।

इस सृष्टि में कही भी देने वाले नहीं ह। हाँ, परिश्रम से अर्जित करने वाले ज़रूर हैं। सब गाँधी जी जैसा बन।